प्रा. डॉ. राजेंद्र मोतीचंद शाह
एम.ए.एम.फिल.पी.एच.डी.
प्राध्यापक हिंदी विभाग,
मुधोजी महाविद्यालय , फलटण
जि. सातारा (महाराष्ट्र).

प्रमाण-पत्र

मैं प्रा.डॉ.राजेंद्र मोतीचंद शाह, प्राध्यापक, हिंदी विभाग, मुधोजी महाविद्यालय, फलटण, यह प्रमाणित करता हूँ कि **श्री. मानकर राजाराम बाबुराव** ने शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध " **नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्यः एक अनुशीलन' (द्रौपदी और उत्तरजय के परिप्रेक्ष्य में)** मेरे निर्देशन में बडे परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध मे प्रस्तुत किये गए है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है, मैं श्री. मानकर के प्रस्तुत शोधकार्य के बारे में पूरी तरह सें संतुष्ट हूँ।

प्रा.डॉ.राजेंद्र शाह
हस्ताक्षर
(प्रा.डॉ.राजेंद्र मोतीचंद शाह)
निर्देशक

फलटण

दिनांक - 22/4/93

प्रख्यापन

"पं. नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्य एक अनुशीलन'
(द्रौपदी और उत्तरजय के परिप्रेक्ष्य में)

यह शोध प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. के लघु शोध-प्रबंध के रुप मे प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

हस्ताक्षर
श्री. मानकर राजाराम बाबुराव.
अनुसंधाता.

फलटण
दिनांक - 22/4/93

भूमिका

बचपन से ही मेरा कविता के प्रति विशेष लगाव रहा है। बी.ए. तथा एम.ए. का अध्ययन करते वक्त आधुनिक हिंदी कवियों के प्रति अधिक रुचि हो गयी। बी.ए. भाग में पं. नरेंद्र शर्मा के काव्य का अध्ययन करते समय उनके काव्य के बारे में मेरे मन में गहरी रुचि पैदा हो गई।

एम.फिल. के लघुशोध प्रबंध का विषय चयन करते समय मेरी दृष्टि उनके खंडकाव्य द्रौपदी के ओर गयी। कविद्वारा चित्रित "नारी के तेजबल का गुणगान" दहनशक्ति से मूल्य चूकाती, नारी नर की जय का, और कर्मयोग साधना का महत्व तथा पीडा भोग का संदेश आदि विशेषताओंने मुझे आकर्षित किया। मेरे मन में पं. नरेंद्र शर्माजी के काव्यपर कुछ शोध कार्य करने की जिज्ञासा निर्माण हुई। मेरी यह इच्छा आदरणीय गुरुवर्य प्रा. डॉ. राजेंद्र शाह जी जो इस लघु शोध प्रबंध के मार्गदर्शक है उनके पास प्रकट की तो आपने महाभारत की कथा के आधारपर लिखा गया और 'द्रौपदी' की अगली कथा जिसमें ली हैं उस 'उत्तरजय' काव्य का भी सुझाव दिया अत मैने 'द्रौपदी' और 'उत्तरजय' खंडकाव्य को चुनना पसंद किया।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में पं. नरेंद्र शर्माके खंडकाव्यों का विश्लेषण सात अध्यायों में विभाजित किया हैं। पहले अध्याय **" खंडकाव्य: सैध्दांतिक विवेचन"** में खंडकाव्य का परिचय, परिभाषा, उसके तत्व का सैध्दांतिक विवेचन होगा। दूसरे अध्याय " **जीवन तथा काव्ययात्रा** मे पं. नरेंद्र शर्मा का परिचय उनकी विभिन्न कृतियों के प्रेरणास्त्रोत और खंडकाव्य की चर्चा की की जायेगी। तीसरे अध्याय "**पं. नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्य वस्तुविन्यास** में प्रस्तुत कृतियों के कथावस्तु की चर्चा होगी। **पं. नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्य : पात्रपरिकल्पना** इस चौथे अध्यायमें खंडकाव्य के खंडकाव्य के तत्वों के अनुसार नरेंद्र शर्मा की प्रस्तुत कृतियों के चरित्रचित्रण की चर्चा की जायेगी। पाँचवे अध्याय " **पं. नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्य शिल्पविधान**" में प्रस्तुत खंडकाव्यों के शिल्प की चर्चा होगी। "**पं. नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्य: जीवन दर्शन**" इस छठे अध्याय में नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्य में चित्रित भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवनदृष्टि की चर्चा की जायेगी। "**पं. नरेंद्र शर्मा के खंडकाव्य समापन**" इस सातवे अध्याय में पहले अध्याय से लेकर छठे अध्याय तक किये गए विवेचन के आधारपर निष्कर्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

प्रा. डॉ. राजेंद्र शाह जो इस लघुशोध प्रबंध के निर्देशक है। अपना सहज

स्नेह, कार्यतत्परता और मौलिक मार्गदर्शन ही मुझे यह लघु शोध प्रबंध लिखने और पूरा करने की प्रेरणा देता रहा। आपने अत्यंत व्यस्त रहने पर भी इस कृति का एक एक पृष्ठ देखा, पढा, मेरी अनगिनत गलतियों को सुधारा, सँवारा, मुझे बार बार प्रोत्साहित किया। प्रस्तुत शोध प्रबंध की समस्त अच्छाईयों और उपलब्दियो का पूरा श्रेय पूज्यवर डॉ. राजेंद्र शाहजी को है। केवल शोध प्रबंध में ही नहीं वरन् जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी मेरे लिए सात्विक पथ प्रदर्शन कर उन्होंने एक आदर्श गुरु के जिस उत्तरदायित्व को निभाया मैं तो मेरा यह परम सौभाग्य समझता हूँ।

विषय चयन सामग्री संकलन तथा बार बार इस विषय की चर्चा के द्वारा मुझे मार्गदर्शन करनेवाले आदरणीय श्रध्देय श्री. डॉ. गजानन सुर्वेजी की सहायता बगैर इस लघु प्रबंध का काम मुझ जैसे छात्र के हाथो असंभव था। इसीप्रकार गुरुवर्य प्रा. एस. के जाधव, गुरुवर्य प्रा डॉ. टी. आर पाटील गुरुवर्य प्राचार्य आर.ए.कदम तथा गुरुवर्य प्राचार्य एन.बी.गुंडे और गुरुवर्य व्ही.एस. औताडे भी मुझे हमेशा प्रोत्साहन देते रहे, उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

जिनके आर्शिवाद के बिना यह अनुसधान कार्य असंभव था वह मेरे पूज्यवर माता पिता का आर्शिवाद सदैव मेरे साथ रहा। मेरे चाचाजी, बडे भाई और बहन तथा बहनोई श्री. एस आर.आडुरकर इन स्वजनो का आर्शिवाद और सहयोग प्राप्त हुआ। उसीतरह मेरी धर्म पत्नी सौ. रंजना के निरंतर प्रोत्साहन से ही मै इस कार्य को पूरा कर सका हूँ अतः उनका भी ऋणी हूँ।

हिंदी के प्रति विशेष आस्था रखनेवाले हमारे महाविद्यालय के प्राचार्य आदरणीय गुरुवर्य वीरसिंह इंगळे जी के मौलिक मार्गदर्शन और सहयोग के लिए मैं उनका ऋणी हूँ। एल.बी.एस. कॉलेज सातारा और कला वाणिज्य महाविद्यालय पॉचगणी के ग्रंथपाल और उनके कर्मचारियों की सहायता के लिए उनका ऋणी हूँ। मेरे मित्र प्रा. मणेर एस.एम.की सहायता के लिए उनका आभारी हूँ। उसीतरह मेरे शुभेच्छु, मेरे सहकारी प्राध्यापक गुरुजनों तथा बंधुओ के प्रति भी मै आभारी हूँ।

इस लघु शोध प्रबंध के टंकलेखन और सुयोग्य प्रस्तुति के लिए संचालक, प्रीतम एजन्सीज सातारा तथा टायपीस्ट सौ. प्रभुणे वृषाली मुकुंद ने जो कष्ट उठाये है, उनके प्रति भी मै आभार प्रकट करता हूँ।

विविध प्रयत्नो के बावजूद भी इस लघु शोध प्रबध में कुछ त्रुटियाँ रह जाना संभव है। पूरीतरह निर्दोषता का दावा तो मैं नहीं कर सकता। फिर भी यदि सहृदय पाठकों को श्रध्देय कविवर पं. नरेद्र शर्मा के खंडकाव्यों का परिचय देकर, उनका रसास्वादन कराने मे मुझे किंचित मात्र भी सफलता मिली तो मै अपने परिश्रम को सार्थक समझूँगा।